सतिश

जयप्रकाश कर्दम की कहानी 'नो बार ' मे अभिव्यक्त दलित समस्या

शोध सार;

किसी भी देश में अपनी परिवेश से संबन्धित कथोपकथन, किस्सागोई, मिथक को आधार बनाकर कहानियों को गढ़ा जाता रहा है। यह प्रक्रिया 21वीं सदी तक आते–आते एक सशक्त साहित्यिक विधा बनकर हमारे सामने खड़ा है। और इस विधा का साहित्यकारों ने स्वागत किया अतः अपनी अनुभवों को कहानी के माध्यम से शब्दबद्ध भी किया। कहानी का प्रभाव इतना पढ़ा कि " ग्लोबल विधा " के रूप में परिचित फ़िल्मकारिता भी अपनी उद्देश्य पूर्ति के लिए कहानियो का सहारा ले रहा है। इस विधा को दलित साहित्य नें भी अपनाया और अपनी पीड़ा एवं दर्द को कहानी के माध्यम से व्यक्त करने लगा। दलित साहित्य के संदर्भ में आत्मकथा को ज्यादा मौलिक एवं सशक्त विधा माना जाता है। परंतु कहानी भी दलितों के जीवन को अभिव्यक्त करने मे सफल रही है। आत्मकथा, उपन्यास, नाटक की तुलना मे इसका स्वरूप कम मात्रा में है परंतु जीवन की दशा को व्यक्त करने में इन सारी विधाओं के जैसे यह भी सशक्त एवं सदृढ़ है। दलित रचनाकार आत्मकथा के बाद कहानी विधा को ही अपना माध्यम बनाया है। इनकी इन्ही कहानियों के माध्यम से समकालीन अर्थार्थ 21वीं सदी के संदर्भ में दलित कहानी(जयप्रकाश कर्दम की कहानी ' नो बार ') में अभिव्यक्त दलित समस्याओं का अध्ययन इस समाज की समस्याओं का वस्तुस्थिति को जानने का प्रयास इस अध्ययन द्वारा किया जाएगा।

बीज शब्द: नो बार, प्रगतिशीलता, दलित समस्या,अटिकेट्स, जातिवाद

शोध विस्तार :

"कहानी" साहित्य की एक नई विधा है। जब साहित्य काव्य की छोर से हटकर गध्य की ओर बढ़ी तब कहानी, उपन्यास आदि विधाओं का जन्म हुआ। यह आधुनिकता का देन माना जा सकता है और प्रगतिशीलता का भी प्रभाव को नकारा नहीं जा सकता। हिन्दी साहित्य में कहानी का प्रारम्भ 20वीं सदी की शुरुआत में ही हुई थी। परंतु दलित कहानी का आरंभ 20वीं सदी के सातवे दशक में हुई। इसका कारण हिन्दी प्रदेश में महात्मा फुले डॉ.बाबासाहेब अंबेडकर जैसा नेतृत्व का अभाव माना जा सकता है। अतः मराठी दलित साहित्य से प्रेरणा लेकर हिन्दी के दलित रचनाकारों ने भी अपनी लेखनी को धारदार बनाया। अपनी साहित्य में दलितों की हक़, पीड़ा, दर्द को सशक्त रूप में व्यक्त करने लगे। इन कहानियों में आए पात्र, भाषा, परिवेश, कथोपकथन और मुख्य रूप से इन कहानियों में व्यक्त मूल समस्याओं के बारे मे विचार किया जा सकता है। हिन्दी दलित कहानी की बात करें, इन कहानियों का प्रारम्भ को लेकर स्पष्ट मत नहीं है। इसके संदर्भ मे लेखिका रमणिका गुप्ता ने अपनी पुस्तक ' भारतीय दलित साहित्य कथाकोश ' में वह लिखती है कि " प्रथम कविता का जन्म अगर वाल्मीकि के मन में कौंच–वध से फूटी करुणा के कारण हुआ तो उसी युग में वाल्मीकि के नायक राम ने जातीय

दंभ से शंभुक की हत्या करके भय और आतंक से दलित कहानी का सूत्रपात किया। महाभारत में गुरु के शीर्ष स्थान पर बैठकर एक अन्य महत्वपूर्ण दलित कथा को जन्म दिया था एकलव्य का अंगूठा जबरन कटवाकर, ताकि क्षत्रीय पुत्र अर्जुन से शूद्रपुत्र एकलव्य आगे न बढ़ सके । "[1] प्रस्तुत हिन्दी दलित कहानी के संदर्भ में मोहनदास नैमिशराय की पहली कहानी ' सबसे बड़ा सुख ' जो ' कथालोक ' में छपी इसी को हिन्दी की पहली दलित कहानी मानी जाती है। सत्तर के दशक में शुरू हुई यह यात्रा नब्बे के दशक में आकार अपनी पकड़ जमा पाया। इससे पहले दलित कहानी पर उतनी चर्चा नहीं हुई जितना की नब्बे के दशक में हुई। हंस के संपादक राजेन्द्र यादव ने भी अपनी पत्रिका के माध्यम से दलित रचनाकारों को अवसर प्रदान किया जो आगे चलकर दलित साहित्य को लाभदायक सबीत हुई। इस मंच से कई समर्थ कहानियाँ एवं कहानीकार उभरकर आए। और दलित जीवन पर दलितों का क्या कहना है? दलितों का जीवन दर्शन को जानने के लिए अतः उस जीवन को व्यक्त करने के लिए इन अवसरों का सख्त जरूरत था। इन कहानियों के प्रासंगिकता के संदर्भ में जयप्रकाश कर्दम कहते है कि – " इन कहानियों में जहां एक ओर पीड़ा का दर्द है, वही इनमे मनुष्यता की महक भी है। इन कहानियों से गुजरना इन्हीं अनुभूतियों से गुजरना है। " [2]

21वीं सदी को आते–आते दलित कहानी और भी सशक्त हुआ है। बहुत सारे रचनाकार दलित समस्याओं पर लिखे हैं, प्रस्तुत इस प्रस्तुति मे जयप्रकाश कर्दम की कहानी ' नो बार ' को आधार बनाकर अलग अलग पहलुओं के माध्यम से दलित समस्याओं को समझने का प्रयास किया गया है।

जयप्रकाश कर्दम रचित ' नो बार ' कहानी एक दलित युवक की कहानी है, जिसमें अंतरजातीय विवाह को लेकर समाज की सच्चाई सामने लाती है। 21वीं सदी तक पहुचने के बावजूद भी इस जातीप्रथा से बाहर नहीं निकल पाए अतः आज भी किसी विशेष जाती के प्रति अपना समाज का रावय्या बदलने का आग्रह प्रस्तुत कहानी करती है। इस कहानी में दो अलग–अलग जाती परिवेश में पले बड़े लोगों की प्रगतिशीलता के अलग अलग मानदंडों को सशक्त रूप में अभिव्यक्त करने में कहानीकार सफल रहे हैं। राजेश जो कि इस कहानी का मुख्य पात्र है वह दलित है, लेकिन योग्यता के आधार पर किसी से भी कम नहीं है। वह अपने आपको प्रोग्रेसिव मानता है, इसी के चलते वह अंतरजातीय विवाह करने का फैसला करता है। इसी के लिए हर दिन अखबारों की मेट्रीमोनियल विज्ञापन को देखने में घंटो भर समय व्यतीत करता है। ठीक वैसे ही जैसे हर शिक्षित स्थापित युवक देखते हैं। परंतु दलित युवक के लिए यह निरशदायक ही रहता है। जिस दिन वह विज्ञापन में नो बार आयेगा वह दिन उसका खुशी का दिन होगा। प्रस्तुत कहानी में भी जातिदंश के बीज देखने को मिलते हैं। प्रस्तुत कहानी उन सभी लोगों पर व्यंग्य करता है जो प्रोग्रेसिवनेस का नकाब पहने हुए है। सवर्ण तो सवर्ण है चाहे वह प्रगतिशील हो या परंपरावादी। जब बात एक दलित की अति है तो सारी प्रगतिशील तत्व सिद्धान्त हवा हवा हो जाती है। इस बात को कहानी में स्पष्ट देखा जा सकता है। यह अनीता के पिता के बातों से समझा जा सकता

[1] कर्दम जयप्रकाश, दलित साहित्य एवं चिंतन समकालीन परिदृश्य, पृ.संख्या 56, 2018

[2] कर्दम जयप्रकाश, दलित साहित्य एवं चिंतन समकालीन परिदृश्य, पृ.संख्या - 58, अमन प्रकाशन कानपुर, 2018

है। पहली मुलाक़ात में कहते हैं की वह जाती–पात में विश्वास नहीं रखते और वे यह भी अपनी बहू बेटियों के ही उदाहरण देकर राजेश को अपनी प्रगतिशीलता का प्रमाण देते हैं। जब उन्हे राजेश का दलित होने का एहसास होता है तब वह असहज हो जाते हैं अतः वही सवर्ण बन जाते हैं जिनका दलित साहित्य सदियों से विरोध करते आया है। वह कहते है " वह सब तो ठीक है कि हम जाती–पाती को नहीं मानते और हमने मेट्रीमोनियल में ' नो बार ' छपवाया था, लेकिन फिर भी कुछ चीजें देखनी ही होती हैं। आखिर नो बार का यह मतलब तो नहीं कि किसी चमार–चूहड़े के साथ ...। "[3] इसी वाक्य के साथ कहानी समाप्त हो जाती है परंतु कई सारे सवालों को जन्म भी देती है, कि क्या 21वीं सदी में जाती प्रथा नहीं है? प्रगतिशील लोग क्या जाती के बंधन से मुक्त हैं? क्या इस समाज में जाती से आधारित घृणा कम हुई है? ऐसे कई सारे प्रश्नों के उत्तर में जवाब मिलेगा सिर्फ नहीं। दलित साहित्य के लिए इन्हीं प्रश्नों का उत्तर ढूँढना अतः दलित समाज को इन समस्याओं से मुक्ति का मार्ग ढूँढने की आवश्यकता है।

प्रस्तुत इस कहानी में जाति की पहचान का भी संदर्भ देखने को मिलता है। सवर्ण लोग किस तरह एक दलित को उसकी भाषा, सोच–विचार के आधार पर पहचानते हैं यह इस कहानी मे देखा जा सकता है। जैसे कि आज–कल जब कोई किराए के लिए घर पूछने आते हैं, तो वह पूछते हैं कि– वेज हो या नान वेज ? बेचूलर हो या फॅमिली वाले ? सर नेम क्या है ? आदि। पूछताछ कि इस प्रक्रिया के पीछे उद्देश्य मात्र जाति को ही जानने का रहता है। और इसका शिकार "D " ग्रेड के नौकरों से लेकर "A " ग्रेड के अफसर एवं बड़े–बड़े विद्वान भी रहे हैं। जब राजेश कांशीरम और मायावती का पक्ष लेता है तब अनीता के पिता को यह स्पष्ट हो जाता है कि यह लड़का दलित ही है। कहानी के एक संदर्भ से भी इसको देखा जा सकता है – " राजेश के साथ बातों से लड़की के पिता को लगा कि यह लड़का जिस तरह की जुबान बोल रहा है कहीं यह शेड्यूलड़ कास्ट तो नहीं है। एस सी ही करते हैं इस तरह की बातें, वे ही पक्ष लेते हैं कांशीरम और मायावती का। "[4] इसमे यह स्पष्ट हो जाता है कि अनीता के पिताजी का दलितों के प्रति क्या राय है। वे प्रगतिशीलता का पोशाक पहने हुए वही सवर्ण हैं जिन्होंने सदियों से दलितों को अछूत बनाकर रखा। आज भी समाज में ऐसे लोग हैं जिनको अपडेट होने की आवश्यकता है।

प्रस्तुत कहानी में दलित एवं पिछड़ों के राजनीतिक गठबंधन का भी संकेत देखने को मिलता है। जो कि अब 21वीं सदी का एक दशक होने के बाद, उत्तर प्रदेश में अखिलेश यादव और मायावती के नेतृत्व में संभव हुआ है। प्रस्तुत यह संकेत दलित कहानियों की प्रासंगिकता एवं कहानीकार जयप्रकाश कर्दम की दूरदर्शिता को उजागर करता है। सरकार किसकी बनेगी? वोट किसे मिलेंगे? यह सारे सवालों के बीच अनीता के पिताजी बी जे पी का पक्ष लेकर बात कर रहे थे तो, राजेश अपनी बात को रखते हुए पूरा राजनीतिक परिस्थितियाँ एवं दलित और पिछड़ों का गठबंधन की संभावनाओं को स्पष्ट करता है। इस बात को राजेश के ही शब्दों से समझ

[3] खुशवाह सुभाष चंद्र, जातिदंश कि कहानियाँ, पृ.संख्या 215, सामयिक प्रकाशन,नई दिल्ली, 2018

[4] खुशवाह सुभाष चंद्र, जाति दंश की कहानियाँ, पृ.संख्या 214, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018

सकते हैं, वह अनीता के पिताजी के उत्तर में कहता है कि– "लेकिन सरकार का स्थायी होना ही जरूरी नहीं है। समाज और राष्ट्र के प्रति उसका दृष्टिकोण भी स्वस्थ, सकारात्मक और प्रगतिशील होना चाहिए। बी जे पी के बारे में यह धारणा है कि उसकी सोच सांप्रदायिक और विघटनकारी है। मुस्लिम बी जे पी को लेकर सशंक्ति हैं। उनको लगता है कि बी जे पी की सरकार का रूख उनके प्रति सकारात्मक नहीं रहेगा। मुस्लिम तो खैर बी जे पी को वोट देंगे ही नहीं, जहां तक दलितों का सवाल है, वे स्वयं पिछड़ों के साथ मिलकर सत्ता में आने के लिए जोड़–तोड़ कर रहे हैं। बिहार मे लालू और यू पी में मुलायम मायावती बी जे पी के रास्ते में सबसे बड़े हर्डल हैं। "[5] प्रस्तुत इस वक्तव्य से कहानीकार का दूरदृष्टि को देखा जा सकता है, प्रस्तुत सत्ता में रही बी जे पी सरकार पर भी दलितों को सोच विचार करने पर मजबूर करता है। और कई हद तक यह सरकार दलितों के विश्वास जुटाने में नाकामियाब रही है। ऐसे ही कहानी के संदर्भ कहानी को एवं कहानी में व्यक्त समस्या को प्रासंगिक बना देते हैं।

उपसंहार :

प्रस्तुत इस कहानी के माध्यम से जातिदंश के समस्याओं को समझने का अवसर मिलता है। प्रस्तुत कहानी इस बात पर ज़ोर देता है कि 21वीं सदी के एक दशक पार करने के पश्चात भी समाज जाति के चंगुल से बाहर नहीं आ पाया है। दलित बी इस देश के प्रजा होने के कारण उनकी समस्याओं के निवारण के बिना देश को उन्नति के शिखर पर ले जाने का सपना सपना ही रेह जाएगा। प्रस्तुत कहानी जाति प्रथा का निर्मूलन करने का आग्रह करता है और साथ ही साथ प्रगतिशीलता के सच्चे मानदंड अपने सामने प्रस्तुत करता है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. खुशवाह सुभाष चंद्र, जातिदंश की कहानियाँ, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018
2. वाल्मीकि ओमप्रकाश, दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017
3. भारती कंवल, दलित विमर्श की भूमिका, अमन प्रकाशन, कानपुर, 2013
4. कर्दम जयप्रकाश, दलित साहित्य एवं चिंतन समकालीन परिदृश्य, अमन प्रकाशन, कानपुर

शोधार्थी, हिन्दी विभाग,कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय, कलबूरगी

Email ID; satishkamble143152@gmail.com Contact no: 7406318191

[5] खुशवाह सुभाष चंद्र, जातिदंश की कहानियाँ, पृ.संख्या 213,214, सामयिक प्रकाशन,नई दिल्ली, 2018